P. R. No.: DL(S)-17/3082/2012-14
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473
Date of Post : 27-28

SEVA-DHAM Plus
Since 1994
.....The Wellness Center
(YOGA, AYURVEDA, NATUROPATHY & PHYSIOTHERAPY)
Relax Your Body, Mind & Soul In A Spiritual Environment
Truly rejuvenating treatment packages through
Relaxing Traditional Kerala Ayurvedic Therapies

KH-57, Ring Road, (Behind Indian Oil Petrol Pump), Sarai Kale Khan, New Delhi - 110013
Ph. : +91-11-2632 0000, +91-11-2632 7911 Fax : +91-11-26821348 Mob. : +91-9868 99 0088, +91-9999 60 9878
Website : www.sevadham.info E-mail : contact@sevadham.info

प्रकाशक व मुद्रक : **श्री अरुण तिवारी**, मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.) के.एच.–57 जैन आश्रम, रिंग रोड़, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–110013, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया

कवर पेज सहित
36 पृष्ठ

मूल्य 5.00 रूपये
अगस्त, 2013

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा।

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

वर्ष : 13 अंक : 08 अगस्त, 2013

: मार्गदर्शन :
पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

: संयोजना :
साध्वी वसुमती
साध्वी पद्मश्री

: परामर्शक :
श्रीमती मंजुबाई जैन

: सम्पादक :
श्रीमती निर्मला पुगलिया

: व्यवस्थापक :
श्री अरूण तिवारी

वार्षिक शुल्क : 60 रुपये
आजीवन शुल्क : 1100 रुपये

: प्रकाशक :
मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने, नई दिल्ली - 110013
फोन नं.: 26315530, 26821348
Website: www.rooprekha.com
E-mail: contact@manavmandir.info

इस अंक में

01. आर्ष-वाणी - 5
02. बोध-कथा - 5
03. शाश्वत स्वर - 6
04. गुरूदेव की कलम से - 7
05. चिंतन-चिरंतन - 13
06. गीतिका - 14
07. गजल - 15
08. युग-चिंतन - 16
09. कहानी - 20
10. मंत्र-विज्ञान - 22
11. स्वास्थ्य - 24
12. चुटकुले - 25
13. बोलें-तारे - 26
14. समाचार दर्शन - 28
15. झलकियां - 31

रूपरेखा-संरक्षक गण

श्री वीरेन्द्र भाई भारती बेन कोठारी, ह्युष्टन, अमेरिका
डॉ. प्रवीण नीरज जैन, सेन् फ्रेंसिस्को
डॉ. अंजना आशुतोष रस्तोगी, टेक्सास
डॉ. कैलाश सुनीता सिंघवी, न्यूयार्क
श्री शैलेश उर्वशी पटेल, सिनसिनाटी
श्री प्रमोद वीणा जवेरी, सिनसिनाटी
श्री महेन्द्र सिंह सुनील कुमार डागा, बैंकाक
श्री सुरेश सुरेखा आबड़, शिकागो
श्री नरसिंहदास विजय कुमार बंसल, लुधियाना
श्री कालू राम जतन लाल बरड़िया, सरदार शहर
श्री अमरनाथ शकुन्तला देवी, अहमदगढ़ वाले, बरेली
श्री कालूराम गुलाब चन्द बरड़िया, सूरत
श्री जयचन्द लाल चंपालाल सिंघी, सरदार शहर
श्री भंवरलाल उम्मेद सिंह शैलेन्द्र सुराना, दिल्ली
श्रीमती कमला बाई धर्मपत्नी स्व. श्री मांगेराम अग्रवाल, दिल्ली
श्री प्रेमचन्द ओमप्रकाश जैन उत्तमनगर, दिल्ली
श्रीमती मंगली देवी बुच्चा धर्मपत्नी स्व. शुभकरण बुच्चा, सूरत
श्री पी.के. जैन, लॉर्ड महावीरा स्कूल, नोएडा
श्री द्वारका प्रसाद पतराम, राजली वाले, हिसार
श्री हरबंसलाल ललित मोहन मित्तल, मोगा, पंजाब
श्री पुरुषोत्तमदास बाबा गोयल, सुनाम, पंजाब
श्री विनोद कुमार सुपुत्र श्री बीरबल दास सिंगला,
श्री अशोक कुमार सुनीता चोरड़िया, जयपुर
श्री सुरेश कुमार विनय कुमार अग्रवाल, चंडीगढ़
श्री देवकिशन मून्दडा विराटनगर नेपाल
श्री दिनेश नवीन बंसल सुपुत्र
श्री सीता राम बंसल (सीसवालिया) पंचकूला
श्री हरीश अलका सिंगला लुधियाना पंजाब
श्री केवल आशा जैन, टेम्पल, टेक्सास
श्री चैनरूप सुशील कुमार पारख, हनुमानगढ़
श्री श्यामलाल वीणादेवी सातरोदिया, हिसार
श्री उदयचन्द राजीव डागा, ह्युष्टन
श्री हेमेन्द्र, दक्षा पटेल न्यूजर्सी
श्री प्रवीण लता मेहत्ता ह्युष्टन
श्री अमृत किरण नाहटा, कनाडा
श्री गिरीश सुधा मेहता, बोस्टन
श्री राधेश्याम सावित्री देवी हिसार
श्री मनसुख भाई तारावेन मेहता, राजकोट
श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाश बंसल, मुक्सर
डॉ. एस. आर. कांकरिया, मुम्बई
श्री कमलसिंह-विमलसिंह बैद, लाडनूं
श्रीमती स्वराज एरन, सुनाम
श्रीमती चंपाबाई भंसाली, जोधपुर
श्रीमती कमलेश रानी गोयल, फरीदाबाद
श्री जगजोत प्रसाद जैन कागजी, दिल्ली
डॉ. एस.पी. जैन अलका जैन, नोएडा
श्री राजकुमार कांतारानी गर्ग, अहमदगढ़
श्री प्रेम चंद जिया लाल जैन, उत्तमनगर
श्री देवराज सरोजबाला, हिसार
श्री राजेन्द्र कुमार केडिया, हिसार
श्री धर्मचन्द रवीन्द्र जैन, फतेहाबाद
श्री रमेश उषा जैन, नोएडा
श्री दयाचंद शशि जैन, नोएडा
श्री प्रेमचन्द रामनिवास जैन, मुआने वाले
श्री संपतराय दसानी, कोलकाता
लाला लाजपत राय, जिन्दल, संगरूर
श्री आदीश कुमार जी जैन, दिल्ली
मास्टर श्री बैजनाथ हरीप्रकाश जैन, हिसार
श्री केवल कृष्ण बंसल, पंचकूला
श्री सुरनेश कुमार सिंगला, सुनाम, पंजाब
श्री बुधमल राजकरण, तेजकरण सिंघी, सरदार शहर

गुरू-पुर्णिमा का महत्व- संसारी आत्माओं को परमात्म पद का रास्ता दिखाने वाले होते हैं- सद्गुरू

आर्ष-वाणी

नहि देहभृतां शक्यं, त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः
यस्तु कर्म फलत्यागी, सत्यागी इत्यभिधीयते।।

-श्रीमद्भगवद्गीता

देह धारी प्राणी के लिए पूर्ण रूप से कर्मों का परित्याग करना असंभव है। लेकिन जो कर्म फल की कामना नहीं करता वह वास्तव में त्यागी कहलाता है।

बोध-कथा

स्वच्छ विचार

बुद्ध को प्यास लगी थी। उनका शिष्य आनंद एक झरने से पानी लेने गया। लेकिन झरने के पास से कुछ बैलगाड़ियों के गुजरने के कारण उसका पानी गंदा हो गया था। यह देखकर आनंद लौट आया और उसने बुद्ध से कहा- 'मैं पीछे छूटी नदी से पानी लेकर आता हूं। उस झरने का पानी बैलगाड़ियों के कारण गंदा हो गया है।' बुद्ध ने आनंद को वापस उसी झरने पर पानी भरने भेजा। लेकिन तब भी पानी साफ न होने के कारण आनंद बिना पानी लिए वापस आ गया। ऐसा तीन बार हुआ। परंतु चौथी बार आनंद हैरान रह गया, जब उसने देखा कि सब सड़े-गले पत्ते नीचे बैठ चुके थे। सारी मिट्टी और काई दूर बहकर जा चुकी थी। पानी आईने की तरह साफ और स्वच्छ हो गया था। वह पानी भरकर वापस लौट आया। बुद्ध ने कहा- 'आनंद! हमारे जीवन को भी विचारों की बैलगाड़ियां रोज गंदा कर देती है। लेकिन मन के इन विचारों की गंदगी से हमें भागना नहीं चाहिए बल्कि मन को झील के पानी की तरह, कुछ देर शांत होने का समय दें, तो सब कुछ स्वच्छ हो जाता है। ठीक उसी झरने की तरह।'

❖

तीन पथिक पहाड़ की ऊपरी चोटी पर लंबा रास्ता पार कर रहे थे। धूप और थकान से उनका गला सूखने लगा। प्यास से व्याकुल होकर उन्होंने चारों ओर देखा पर वहां कहीं पानी न था। एक झरना बहुत गहराई में नीचे बहता दिखा। एक पथिक ने आवाज लगाई, ईश्वर, सहायता कर, हमें तक पानी पहुंचा।' दूसरे ने पुकारा- 'हे इंद्र, बादल ला और जल बरसा।' तीसरे पथिक ने किसी से कुछ नहीं मांगा। चोटी से नीचे उतर तलहटी में बह रहे झरने तक पहुंचा और प्यास बुझाई। दो प्यासों की आवाजें अब भी सहायता के लिए पुकारती हुई पहाड़ी को प्रतिध्वनित कर रही थीं, परंतु जिसने स्वावलंबन का साहस किया, वह तृप्त होकर फिर आगे बढ़ चलने में समर्थ हो गया।

शाश्वत स्वर

हमने भगवान को कमीशन एजेन्ट बना लिया है

आइंस्टीन कहते थे कि ईश्वर एक्सपेंडिंग यूनिवर्स है अर्थात यह लगातार फैलता हुआ ब्रह्मांड। लेकिन हमार ईश्वर मूर्तियों में और मंदिरों में बंद है। या तस्वीरों में जड़ दिया गया है। हमारे लिए वह किसी खिलौने की तरह है। पुजारी और भक्त अपने इस भगवान को खिलाते हैं, उसका शृंगार करते हैं, उसे सुलाते हैं, पंखा करते हैं। जैसे छोटे बच्चे गुड्डे-गुडियों की शादी करते हैं, उसी प्रकार ये भक्त जन भी अपने भगवान का ब्याह करते हैं, जन्मोत्सव मनाते हैं वगैरह-वगैरह।

हमारा ईश्वर हमारे अपने ही हाथों से बनाया हुआ है, इसलिए हम उसके साथ चाहे जो खिलवाड़ कर लें, यह ईश्वर हमारे स्वार्थों को सहारा देता है। हमारे लोभ और द्वेष का पोषण करता है। हमारा ईश्वर जनमता है और मरता है। इसीलिए एक दार्शनिक ने कहा है कि ईश्वर मर गया है, तभी तो इतने दुष्कर्म इस संसार में हो रहे हैं। आज आदमी की हालत देख कर लगता नहीं कि ईश्वर कहीं जिंदा होगा। भारतीय ऋषि जिसे 'ब्रह्म' कहते थे, वह न जनमता है, न मरता है। वह मन-बुद्धि से परे है। पर उसे हम मन-बुद्धि से ही पकड़ना चाहते हैं। यही कारण है कि लोगों ने उस अशरीरी ईश्वर की अनेक तरह की मूर्तियां बना रखी हैं। वे अंधविश्वास और आडंबर के जाल में जकड़ गए हैं।

मेरी आंखों देखी घटना है। एक मसखरे ने लोगों को बेवकूफ बनाने की सोची। उसने एक तालाब के किनारे सफेद मिट्टी से शिवलिंग जैसे आकार का एक प्रतीक बना कर रख दिया और वहां धतूरा वगैरह के फूल डाल कर अगरबत्ती जला दी। कुछ फल-मूल भी रख दिए। फिर आते-जाते लोगों से बताने लगा, यहां शिव जी प्रगट हुए हैं, दर्शनों का लाभ लें। देखते-देखते पूजा करने वाले आने लगे। पैसे और फल-फूल का चढ़ावा भी आने लगा। शाम तक जो भी जमा हुआ, मसखरा वह बटोर कर ले गया। तो यहां की श्रद्धा, अंधविश्वास में बदल चुकी है। हम असली ईश्वर को समझ नहीं पाते। धर्म के ठेकेदारों ने ईश्वर को एक प्रॉडक्ट या मिथक बना दिया है। फिल्मों में जब नायक या नायिका पर संकट आता है, तब वह ईश्वर की पूजा करता हुआ दिखाया जाता है। जब जीवन में सुख होता है तो उसके पास भी नहीं फटकता। क्या ईश्वर दुखों के समय ही याद किया जाना चाहिए?

सत्यनाराण की कथा हो या फिर सात दिवसीय भागवत कथा, गणेशोत्सव हो या फिर नवरात्रों का देवी-पूजन, इन सब अवसरों पर हम ईश्वर को 'मैनेजिबल' बना कर पेश करते हैं यानी तुम हमारे फलां-फलां दुख दूर करो, फलां-फलां इच्छाएं पूरी करो और बदले में हम तुम्हारी इस-इस तरह से पूजा करेंगे और ये-ये चढ़ाएंगे। हमें ईश्वर नहीं, एक कमीशन एजेंट चाहिए।

-प्रस्तुति : निर्मला पुगलिया

जिसे तू मारना चाहता है, वह तू ही है

यह सम्पूर्ण सृष्टि जीवमय है। एक सुई के नोक जितना भी इसका हिस्सा जीवाणु-रहित नहीं है। भगवान महावीर कहते हैं- यह मिट्टी भी सचेतन है, जल भी सचेतन है, अग्नि भी सचेतन है, हवा भी सचेतन है, वनस्पति भी सचेतन है और क्षुद्र कीट पतंगों से लेकर हाथी और मनुष्य तो स्पष्टतः सचेतन हैं ही। शास्त्रों के इस कथन के साथ आज का विज्ञान भी सहमत है। इस स्थिति में प्रश्न यह उठता है एक देहधारी के लिए क्या संपूर्ण अहिंसामय जीवन सम्भव है। उसे अपने जीवन के लिए रोटी, पानी, आवास आदि सबकुछ चाहिए। रोटी के लिए उसे खेती करनी होगी। पानी के लिए उसे जलाशय बनाने होंगे। भोजन पकाने तथा प्रकाश पाने के लिए उसे अग्नि का उपयोग करना होगा। सांस के लिए उसे हवा चाहिए। आहार के लिए फल तथा अन्न आदि वनस्पति का उपभोग करना होगा। आवास के लिए भवन बनाने होंगे, जिनके निर्माण में मिट्टी, पानी के साथ-साथ छोटे-मोटे जीव-धारियों की हिंसा निश्चित है। कृषि में भी अनेक प्राणियों का वध होता ही है। फिर सम्पूर्ण अहिंसा की चर्चा क्या अपने में बेमानी ही नहीं है। इस प्रश्न के उत्तर से पहले, मैं सोचता हूं, अहिंसा की परिभाषा पर थोड़ी-सी चर्चा हो जाना प्रासंगिक ही रहेगा।

अहिंसा की परिभाषा

साधारणतया अहिंसा का अर्थ है किसी भी छोटे, बड़े प्राणी का वध नहीं करना, अंग-भंग नहीं करना, कष्ट नहीं देना, नहीं सताना। इस परिभाषा को थोड़ा और विस्तार देते हुए कहा गया- सर्व प्राण, भूत, जीव और सत्त्वों का हनन नहीं करना, उन पर शासन, हुकूमत नहीं करना, उनको दास नहीं बनाना, उनको परिताप-संताप नहीं देना, उनका प्राण-वियोजन नहीं करना। अहिंसा की इस परिभाषा में लगभग सभी धर्मशास्त्र सहमत हैं। किन्तु गहराई में जाने पर हमें मानना होगा कि अहिंसा की यह परिभाषा बहुत स्थूल और अधूरी है। इसको सम्पूर्ण मान लेने पर स्वयं अहिंसा और उसकी व्यावहारिक उपयोगिता पर ही अनेक प्रश्न-चिह्न लग जायेंगे।

एक उदाहरण लें। एक व्यक्ति अपने शत्रु को मारना चाहता है, उसका अंग-भंग करना चाहता है, उसे दुःख संताप देना चाहता है, उसे दास बनाना चाहता है, उसे हुकूमत में लेना चाहता है, उसका प्राण-वियोजन करना चाहता है, किन्तु ऐसा चाहते हुए भी वह कुछ नहीं कर पाता है, क्या उसे अहिंसक माना जाए यद्यपि वह हिंसा की आग में तिल-तिल जल रहा है, किन्तु असमर्थता-वश अपने शत्रु का कुछ भी बिगाड़ नहीं पाता है। क्या वह अहिंसा-सेवी है इसके ठीक विपरीत दूसरा उदाहरण लें। एक मरीज भयंकर वेदना से तड़प रहा है, मृत्यु के साथ जूझ रहा है, उसके प्राणों को बचाने के लिए एक डॉक्टर उसका आपरेशन करता है, चाकू से उसके अंग को चीरता है, संयोग-वश फिर भी वह बच नहीं पाता है, इस अवस्था में क्या उस डॉक्टर को उसका हत्यारा माना जाए।

अहिंसा की उपरोक्त परिभाषा के अनुसार पहला व्यक्ति अहिंसक माना जाना चाहिए। क्योंकि वह न किसी को मार रहा है, न अंग-भंग कर रहा है, न दास बना रहा है, न किसी को दुःख-संताप दे रहा है, नहीं किसी का प्राण-वियोजन कर रहा है। और दूसरा व्यक्ति हिंसक माना जाना चाहिए क्योंकि उनके द्वारा अंगच्छेद हो रहा है, प्राण-वियोजन भी हो रहा है। किन्तु वस्तुतः ऐसा है नहीं। न पहला व्यक्ति अहिंसक है और न दूसरा हिंसक। क्योंकि पहले व्यक्ति का चित्त हिंसा से भरा है, इसलिए शरीर के तल पर वह किसी की हिंसा न करते हुए भी हत्यारा है। दूसरे व्यक्ति का चित्त अहिंसा और दया से भरा है, इसलिए शरीर के तल पर उसके द्वारा हत्या होते हुए भी वह अहिंसक है, हत्यारा नहीं है।

महत्त्वपूर्ण है चित्त-दशा, न कि घटना

जैन पुराणों का एक प्रसंग है। भगवान महावीर के मुख से खुद के नरक गमन की भविष्यवाणी सुनकर मगधापति बिम्बसार बहुत विचलित हो उठा। उसने चिंतातुर स्वर में पूछा- भगवन्, क्या कोई उपाय है जिससे मेरा यह नरक बंधन टल जाए। महावीर ने कहा, अवश्य है। अगर तेरे नगर का काल-सौकरिक कसाई एक दिन के लिए प्रतिदिन मारे जाने वाले पांच सौ भैंसों का वध न करे, तो तेरा नरक बन्धन टल सकता है।

भारी मन से बिम्बसार राजमहलों में आया। उसने काल-सौकरिक को बुलाकर आग्रह किया कि वह एक दिन के लिए पांच सौ भैंसों का वध न करे। कालसौकरिक ने अपनी असमर्थता प्रकट कर दी। राजा ने प्रलोभन दिया। फिर भी वह नहीं माना। उसका कहना था प्रतिदिन पांच सौ भैंसों का मारना उसकी वंश परम्परा है। वह अपने परम्परागत नियम को कैसे तोड़ सकता है।

राजा झुंझलाया। उसने कालसौकरिक को एक दिन के लिए अन्धकूप में छोड़ दिया। न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी। कुएं में भैंसे होंगे ही नही, फिर वह किसको मारेगा लेकिन कालक भी अपनी धुन का पक्का था। उसने कुएं में ही अपने आसपास की मिट्टी को इकट्ठा किया। उस मिट्टी का एक भैंसा बनाया। अपने हाथ का खड़ग बनाया और फिर उस भैसे का सिर धड़ से अलग करते हुए बोला, यह मारा एक, फिर मिट्टी को इकट्ठा किया। उसका भैंसा बनाया। उसे हाथ की खड़ग से फिर मारते हुए बोला, यह मारा दो। दिनभर यही सिलसिला चलता रहा। और कुछ काम था भी नहीं। इस प्रकार उसने गिन-गिन कर पूरे पांच सौ भैंसे मारकर ही सुख की सांस ली।

दूसरे दिन बिम्बसार श्रेणिक भगवान महावीर के चरणों में पहुंचा। उसका मन कुछ आश्वस्त था कि उसने कालक कसाई को कल पांच सौ भैंसों का वध नहीं करने दिया। किंतु भगवान महावीर ने सारा रहस्य खोलते हुये उसे बताया कि कालक ने तो पांच सौ भैंसें मार लिये हैं। यह सुनते ही राजा का मन उदास हो गया। उसका सारा श्रम ही बेकार चला गया था।

अब हम इसी घटना को अहिंसा की परंपरागत परिभाषा की कसौटी पर कसें तो कालक कसाई ने कोई भी हिंसा का आचरण नहीं किया है। उसने किसी का वध नहीं किया है, न किसी को कष्ट-संताप दिया है, अतः वह हिंसक नहीं होना चाहिये। किन्तु महावीर कहते हैं, कालक हिंसक है, उसने पांच सौ भैंसे मार लिये हैं, हिंसा का आचरण कर लिया है। घटना के स्तर पर चाहे उसने किसी का वध न किया हो किंतु चित्त की भूमिका पर वह वध कर चुका है। इसलिये कालक हिंसक है।

इस घटना से स्पष्ट होता है कि शरीर के तल पर होने वाली घटना का महत्व नहीं, किन्तु महत्व है हमारी चित्त दशा का। यदि मन में हिंसा है, बाहर से हम अहिंसक होते हुये भी हिंसक ही हैं। मन में यदि अहिंसा है, तो बाहर से हिंसक-प्रवृत्ति होते हुई भी हम अहिंसक हैं। अनेक शास्त्रीय उदाहरण इसके साक्षी हैं। भगवान ऋषभदेव की माता मरुदेवी हाथी के ओहदे पर बैठी-बैठी निर्वाण को उपलब्ध हो जाती है। चक्रवर्ती भरत राजमहलों का जीवन जीते हैं, शासन व्यवस्था का संचालन करते हैं, युद्ध भी लड़ते हैं, और एक दिन वही जीवन जीते-जीते कैवल्य को प्राप्त कर लेते हैं। प्रश्न होता है यह कैसे सम्भव है। शास्त्रकार कहते हैं- यह इसलिए संभव है कि भरत शरीर के तल पर राजमहलों का जीवन जीते हुए भी, वे भीतर में, राजमहलों में नहीं हैं। शरीर से युद्ध मैदान में मार-काट करते हुए भी वे भीतर से उसमें कहीं आसक्त नहीं हैं। भीतर से वे युद्ध से जुड़े हुए नहीं है, इसलिए बिना किसी तप, जप, योग, ध्यान और साधना के भी वे कैवल्य को प्राप्त हो जाते हैं।

सनातन धर्म परम्परा में इसी को लीला कहा गया। उसके मत में यशोदा नन्दन श्रीकृष्ण लीला पुरूष हैं। वे राजनीति करते हैं, राजनीति में छल-कपट का सहारा भी लेते हैं, युद्ध का संचालन भी करते हैं, किन्तु यह सब कुछ करते हुए भी वे भीतर से उसमें नहीं हैं। यह उनकी लीला है। लीला यानि शरीर तल पर सांसारिक क्रियाओं को संपादित करते हुए भी भीतर से उनमें लिप्त नहीं होना, आसक्त नहीं होना। श्रीमद्भगवद्गीता का प्रमुख संदेश यही अनासक्ति योग है।

यदि हमारा भीतरी चित्त हिंसा से भरा है, शरीर तल पर घटित होने वाली हिंसा का अपने में कोई अर्थ नहीं है। यदि हमारा भीतरी चित्त अहिंसा से भरा है, बाहरी शरीर तल पर घटित होने वाली हिंसा का अपने में कोई अर्थ नहीं है। भीतरी चित्त दशा के आधार पर ही बाहरी घटनाएं अपने सही अर्थ पा सकेंगी। इसी के आधार पर चित्त में अहिंसा और अनुकंपा से भरा एक डॉक्टर के हाथों से अगर किसी का प्राणांत हो भी जाए तो भी वह हत्यारा नहीं होगा। चित्त में हिंसा और घृणा से भरा एक व्यक्ति किसी की हत्या न कर पाने के बावजूद भी वह हत्यारा ही होगा। यह सारा निर्णय भीतरी चित्त दशा के आधार पर होगा, बाहरी घटनाओं के आधार पर नहीं।

क्या प्राणि-हिंसा हिंसा नहीं

यहां यह प्रश्न स्वाभाविक है कि अनासक्त चित्त से होने वाली प्राणि-हिंसा को क्या हिंसा नहीं माना जाना चाहिये? उत्तर भी इसका स्पष्ट है। जिस चित्त में किसी प्रकार की आसक्ति नहीं है, न राग-द्वेष है, न बैर-घृणा है, उस अनासक्त चित्त से होने वाली हिंसा को निश्चय से हिंसा नहीं माना जायेगा। तभी तो माता मरुदेवी, चक्रवर्ती भरत निर्वाण और कैवल्य को प्राप्त हो जाते हैं। ये दो ही उदाहरण नहीं, बीसियों उदाहरण जैन परंपरा में मिलते हैं। सनातन परंपरा में नारायण श्रीकृष्ण भी इसके प्रखर उदाहरण हैं। और भी बहुत सारे उदाहरण इस सन्दर्भ में दिये जा सकते हैं। यदि मरुदेवी, भरत और श्रीकृष्ण अनासक्त चित्त से सम्पादित हिंसा कर्म से हिंसा-मुक्त रह सकते हैं, तो दूसरा कोई भी उस चित्त अवस्था को प्राप्त कर ले, इसमें आपत्ति क्यों होनी चाहिये।

वस्तुतः प्राणि-हिंसा व्यावहारिक हिंसा है और प्राणि-दया है व्यावहारिक अहिंसा। निश्चय दृष्टि यह है, न कोई किसी को बचाने वाला है, न ही कोई किसी को मारने वाला है। सब अपना-अपना जीवन जी रहे हैं, अपना-अपना मरण कर रहे हैं। कोई किसी को न मारे, फिर भी मृत्यु आने पर सबको मरना है। कोई किसी को न जिलाये, किन्तु सबको

अपना जीवन जीना ही है। इसलिए मारने वाला तथा बचाने वाला तथा मरने वाला और बचने वाला, ये सब व्यवहार हैं। और इसी व्यवहार के स्वस्थ निर्वाह के लिये हिंसा और अहिंसा की यह व्यावहारिक परिभाषा दी गई है।

हिंसा किसकी

जब कोई किसी को मारता है हम उसे हिंसा कहते हैं। यहां प्रश्न होता है, किसकी होती है हिंसा। आत्मा द्वारा आत्मा की हिंसा तीन काल में भी नहीं हो सकती। आत्मा अमर है, कभी मरती नहीं है। आत्मा अजन्मा है वह कभी जन्म नहीं लेती। आत्मा अजर है, वह कभी जरा को प्राप्त नहीं होती। आत्मा अविनाशी है, उसका कभी विनाश नहीं होता। फिर किसकी होती है हिंसा। शरीर की, शरीर तो स्वयं मृत है, मृत का कैसा मरना। माटी को तो माटी में मिलना ही है। शरीर तो मरण-धर्मा है, इसका स्वभाव ही है मरण का। फिर मरण का मरण क्या? फिर किसकी होती है हिंसा इन्द्रियां, मन, बुद्धि और प्राणों की ये आत्मा और शरीर से अलग तो नहीं। इनकी क्या हिंसा? फिर सवाल गूंजता है, हिंसा में किसकी होती है हिंसा। अहिंसा में किसकी होती है अहिंसा।

हिंसा भी अपनी, अहिंसा भी अपनी

जहां से यह सवाल गूंजता है, वहीं से फूटता है उत्तर। हिंसा में अपनी ही होती है हिंसा। अहिंसा में अपनी ही होती है अहिंसा। दूसरे की हिंसा या दूसरे की अहिंसा, यह केवल व्यवहार है। वास्तव में हिंसा अथवा अहिंसा अपनी ही है। भगवान महावीर कहते हैं- तुमंसि णाम सच्चेव जं हंतव्वं ति मन्नसि- जो हंतव्य है, जिसे तू मारना चाहता है, वह तू ही है। जिसे तू दास बनाना चाहता है, वह तू ही है। जिसे तू हुकूमत/शासन में लेना चाहता है, वह तू ही है। जिसे तू सन्ताप-परिताप देना चाहता है, वह तू ही है। जिसके तू प्राण लेना चाहता है, वह तू ही है। इसलिये जब तू औरों को मारता है, तब अपने को ही मारता है। जब तू औरों के प्राण लेता है, तब अपने ही प्राण लेता है, औरों की हिंसा करता है, तब निश्चय में अपनी ही हिंसा करता है।

या इसको ऐसे कहें कि जब हिंसा अपनी होगी, तब अहिंसा भी अपनी ही होगी। जब घृणा अपनी होगी तो दया भी अपनी होगी।

तुलसी दया न पार की, दया आपकी होय
तू किसको मारे नहीं, तुझे न मारे कोय।

हिंसा भी अपनी है, दया और अहिंसा भी अपनी है। सब कुछ अपना है। पराया कुछ है ही नहीं। फिर पर का मरना या जीना, इससे हिंसा और अहिंसा का सम्बन्ध हो ही कैसे सकता है।

दूसरे से जुड़ी हुई हिंसा या दया यह सब व्यवहार है। हम व्यवहार में जीते हैं, इसलिए व्यवहार की व्यवस्थाएं भी खड़ी करनी होती है। किन्तु उनका महत्व व्यवहार जितना-सा ही होता है। चिन्तन की गहराई में वे न टिक पाती हैं और न ही व्यवहार-हिंसा या अहिंसा के आधार पर किसी प्रकार की जीवन-शैली की परिकल्पना भी की जा सकती है। प्रवृत्ति मार्ग में तो यह सम्भव है ही नहीं, निवृत्ति मार्ग में भी अन्ततः अनेक-अनेक आपदाओं को स्वीकार करना ही पड़ता है। भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति भौतिक वस्तुओं से ही सम्भव हो पाती है, उस स्थिति में हर देहधारी को कमो-बेस व्यावहारिक हिंसा का सहारा लेना ही होता है।

प्रमाद ही हिंसा

निष्कर्ष की परिभाषा में कहा जा सकता है हिंसा या अहिंसा का सम्बन्ध प्रमुखतः चित्त-वृत्ति से होता है, प्रवृत्ति से नहीं। जहां शरीर है, वहां प्रवृत्ति है। जहां प्रवृत्ति है वहां किसी न किसी रूप में हिंसा जुड़ी है। फिर शरीर-धारण से जुड़ी प्रवृत्तियां हर किसी को करनी ही होगी। इस स्थिति में प्रवृत्ति-जन्य हिंसा से बचना सम्भव ही नहीं है। श्रीमद्भगवत गीता के शब्दों में ''सर्वारंभाहि दोषेण धूमेनाग्नि रिवावृता'' सब प्रवृत्तियां हिंसा दोष से दूषित है। जैसे अग्नि धूम से। किन्तु अगर हमारे चित्त में किसी प्रकार का राग, द्वेष या कषाय नहीं है, उस चित्त दशा में होने वाली प्रवृत्ति-जन्य हिंसा बन्धन का कारण नहीं बनती है। भगवान महावीर के सामने प्रश्न आया, हम कैसे चलें, कैसे बोलें, कैसे खाएं, कैसे बैठें, कैसे सोएं, जिससे पाप का बन्धन न हो। तब महावीर ने यह नहीं कहा- तुम चलो मत, बोलो मत, सोओ मत, पाप का बन्धन नहीं होगा। किसी भी प्रवृत्ति का निषेध नहीं किया महावीर ने। क्योंकि यह सम्भव ही नहीं है। व्यावहारिक भी नहीं है। उन्होंने कहा अप्रमादपूर्वक चलो, बोलो, खाओ, बैठो, सोओ, कोई बन्धन नहीं होगा, अप्रमाद अर्थात अनासक्ति। अनासक्त, वीतराग चित्त से सम्पादित हर प्रवृत्ति अपने में बन्धन-मुक्त होती है।

अप्रमाद अहिंसा है। प्रमाद ही हिंसा है। किसी को मारना, अंग-भंग करना, सन्ताप-परिताप देना, दास बनाना, किसी का प्राण हरण करना, किसी पर आक्रमण करना, किसी का शोषण-उत्पीड़न करना, यह तो प्रमादपूर्ण चित्त की परिणतियां हैं। भीतर का प्रमाद, भीतर की हिंसा ही बाहर इस प्रकार की प्रवृत्तियों में प्रकट होती हैं। मूल है वृत्तियां, उनकी परिणति हैं ये प्रवृत्तियां। वृत्तियां बदलते ही प्रवृत्तियों के अर्थ बदल जायेंगे। अहिंसा की पूर्ण परिभाषा इन वृत्तियों के आधार पर ही सम्भव है, प्रवृत्तियों के आधार पर नहीं।

महावीर की सत्य-संधित्सा

○ संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

एक व्यक्ति प्यास से व्याकुल हो रहा था। उसे पानी की चाह थी, पर वह उसके लिए श्रम नहीं करना चाहता था। बिना श्रम उसकी प्यास नहीं बुझी, तब उसने परिश्रम करना शुरू किया, पर श्रम कहां करना चाहिए, इस ज्ञान के अभाव में उसने निर्जल भूमि को खोदा। पानी नहीं मिला ज्ञान और क्रिया का योग हुआ। भूमि सजल थी और खोदने का श्रम भी किया गया पर निष्ठा का अभाव था। पांच-सात हाथ भूमि खोदी, जल नहीं निकला तो व्यक्ति अधीर होकर दूसरे स्थान को खोदने लगा। वहां पर भी जल नहीं मिला। इस प्रकार चार-पांच स्थानों पर भूमि को खोदा गया पर सफलता नहीं मिली और व्यक्ति प्यास से तड़पता रहा।

एक दूसरा व्यक्ति जिसमें ज्ञान, क्रिया व निष्ठा का योग था, उसने अपने ज्ञान से भूमि का परीक्षण किया। परिश्रमपूर्ण खनन किया और तब तक उसका धैर्य विचलित नहीं हुआ, जब तक उसे भूमि पर तैरता हुआ जल दिखाई नहीं दिया। खोदते-खोदते जल निकल आया। पानी पीकर वह स्वयं तृप्त हुआ ही, लाखों-लाखों प्राणियों का सहयोगी बनकर कृतकृत्य हो गया।

भगवान् महावीर ने जीवन की सफलता के लिए ज्ञान, क्रिया और निष्ठा का होना आवश्यक बताया है। सत्यबोध जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य है। इस लक्ष्य की सिद्धि में अज्ञान और अकर्मण्यता बाधक है, इसी प्रकार आतुरता भी बाधक है। सत्य को पाने वाले व्यक्तियों का पथ प्रदर्शन करते हुए भगवान् महावीर ने कहा- 'सच्चंक्षि धिइं कुव्वहा' सत्य में धैर्य रखो। धैर्य के अभाव में व्यक्ति सत्य के समीप पहुंचकर भी उसे प्राप्त नहीं कर सकता।

वैज्ञानिक लोगों की आस्था कितनी विचित्र है? वे भौतिक अभिसिद्धि के लिए सैकड़ों वर्षों तक धैर्य से कार्यरत रह सकते हैं, पर एक अध्यात्मनिष्ठ व्यक्ति आन्तरिक उपलब्धि के अन्तिम छोर पर आकर अपना धैर्य खो बैठता है। यह अधीरता ही अध्यात्म का प्रकाश फैलने में बाधा बन रही है।

भगवान् महावीर को सत्य की तीव्र जिज्ञासा थी। वे जनसंग्रह को महत्व नहीं देते थे, वे जन-जन को सत्य की एषणा में लगाने को देते थे। जब तक उन्हें सत्य की प्राप्ति नहीं

हुई, उन्होंने सत्य का उपदेश भी नहीं दिया। सत्योपलब्धि के बाद भी उन्होंने यह कभी नहीं कहा कि मैं जो बताता हूं, उसी का अनुसरण करो, किन्तु उनका स्पष्ट और प्रबल उद्घोष था, सत्य की शोध करो। किसी अन्य के द्वारा शोधित सत्य से भी व्यक्ति लाभान्वित हो सकता है, पर उसी में तृप्ति अनुभव करना 'सत्य पर आवरण' डालना है। भगवान् महावीर एक परम्परा-बद्ध धर्म-संघ के अनुशास्ता थे। फिर भी वैचारिक अभिनिवेश से सर्वथा मुक्त थे। उनके विचारों की उदारता ने कभी यह आग्रह नहीं किया कि आराधना या सत्य की साधना किसी अमुक वेशभूषा, सम्प्रदाय में ही हो सकती है।

वेशभूषा के साथ धर्म का अनुबन्ध हो ही नहीं सकता। इस दर्शन के आधार पर ही भगवान महावीर ने गृहस्थ-वेश में भी मुक्ति का अवकाश दिया है। धर्म आत्मगत नहीं होता तो मुनि का वेश स्वीकार करने पर भी मोक्ष का मार्ग प्रशस्त नहीं हो सकता।

भगवान् महावीर ने संघ-बद्ध साधना की बात बताई थी, किन्तु इसके साथ यह भी कहा था कि कई व्यक्ति धर्म-संघ को छोड़ देने पर भी धर्म से रिक्त नहीं होते और कुछ व्यक्ति धर्म-सम्प्रदाय की सीमाओं में रहकर भी धर्म को आत्मसात् नहीं कर सकते।

भगवान् महावीर के हर अनुयायी का पहला कर्तव्य है कि वह वैचारिक आग्रह को छोड़कर सत्य को अनावृत करने का प्रयास करें।

अन्य लोग हमारे बारे में क्या सोचते हैं, इस चिन्तन से मुक्त होकर अपने लक्ष्य को साधें।

गीतिका

अयि मानव कर जीवन में कुछ साधना,
तर जाएगा आत्म देव की शुद्ध करो आराधना।

मानव के मन पर तृष्णा के बादल आ मंडराते हैं
उसके पीछे धर्म कर्म भी सारे कहीं छुप जाते है
दिन-2 बढ़ती पैसे की यहां कामना.
पैसे की ममता करवाती, क्या-क्या यहां पर पाप है
यह चिनगारी प्रेम वृत्ति को, भस्म करेगी साफ है
आकाश समा इच्छा पर सेतु बाँधना।

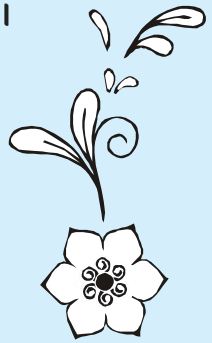

तर्ज- खड़ी नीम के नीचे

○ साध्वी मंजुश्री

-आचार्यश्री रूपचन्द्र

उनसे पहली मुलाकात ही गलत हो गई
नई जिंदगी की शुरुआत गलत हो गई।

भूल गए हम किन्तु उन्होंने याद दिलाया
बात-बात में कैसे बात गलत हो गई।

उनकी इस छोटी-सी गलती के कारण ही
खुशियों की पूरी बारात गलत हो गई।

कटने ही वाली थी खड़ी फसल सपनों की
इतने में कोई बरसात गलत हो गई।

सारी बस्ती सराबोर उनकी खूशबू से
शायद नजरों की सौगात गलत हो गई।

घूर रहे थे महफिल में हमको वो ऐसे
चांद-सितारों की यह रात गलत हो गई।

अब तो मिलता मंजिल का भी हमें बुलावा
लेकिन अरमानों की घात गलत हो गई।

अधिकार की तकरार

एक बार रामकृष्ण परमहंस के दो चेलों में विवाद हो गया कि हम में बड़ा कौन है?' निर्णय नहीं हो पाने पर दोनों श्री रामकृष्ण के पास पहुंचे और फैसला करने का निवेदन किया।

परमहंस बोले, ''इसका निर्णय तो बहुत सरल है और यही है कि आपस में जो दूसरे को बड़ा समझता है, वही बड़ा है।''

अनावश्यक व अनुपयोगी पद-विहार

○ ललित कुमार नाहटा

जैन धर्म में साधु-साध्वियों को जंगम तीर्थ कहा गया है व तीर्थ रक्षा व सेवा का दायित्व श्रावक-श्राविकाओं का है। वर्तमान में साधु-साध्वियों की सड़क दुर्घटना एक आम व नित्य का समाचार बन गया जिस पर गहन चिंतन के द्वारा उपाय ढूंढ़ना शीघ्र व अति आवश्यक है। हमारे संघ पद विहार करते हैं उसके पीछे दो कारण बताये गये हैं-

1. हिंसा से बचने हेतु।
2. अहिंसा के प्रचार-प्रसार हेतु।

1. हिंसा से इसलिए बचते हैं कि नंगे पांव पैदल चलते हैं जिससे सूक्ष्म जीवों की भी हिंसा न हो जो मार्ग में जमीन पर चलते हैं। यह बिन्दु वर्तमान में प्रासांगिक नहीं रहा। कारण अधिकतर साधु-साध्वियों की व्यवस्था हेतु श्रावकों के वाहन आगे-पीछे दौड़ते हैं व श्रावक भी दर्शन के लिए या रास्ते की सेवा के लिए वाहनों का प्रयोग करते हैं तो जीव हिंसा तो उन्हीं के निमित होती है। निरर्थक अधिक धन, समय व श्रम भी खर्च होता है।

उदाहरणार्थ- जयपुर से दिल्ली की दूरी 250 कि.मी. है व वाहन में करीब पांच घण्टे लगते हैं। गुरु भगवन्त जब यह यात्रा करते हैं तो इन्हें करीब 20 दिन लगते हैं। रास्ते की गोचरी, सेवा व व्यवस्था के लिए संघ, वाहन व सेवादार देते हैं। वह वाहन व सेवादार 20 दिन उन्हीं गुरु भगवन्त की यात्रा के निमित उनके साथ रहते हैं व आगे की व्यवस्था के लिए वाहन अतिरिक्त चक्कर लगाता है अर्थात् दिल्ली तक पहुंचते-पहुंचते 700-750 कि. मी. तक वाहन चलता है। सेवादारों की तनख्वाह, पेट्रोल, मोबाइल व खाना खुराकी पर खर्च होता है वह अलग। रास्ते में देखभाल करने, दर्शन का लाभ लेने के लिए श्रावक-श्राविकाओं के वाहन चलते हैं। वे भी तो गुरु भगवंत के निमित ही चलते हैं चाहे परोक्ष ही सही।

2. अहिंसा के प्रचार-प्रासार के लिए रास्ते में आने वाले ग्राम व शहर वासियों को उपदेश दे सकें। यह बिन्दु भी वर्तमान व्यवस्था में उपयोगी नहीं रहा। कारण गुरु भगवंतों का विहार पूर्व तय व्यवस्था से होने लगा जिसमें रास्ते के ग्राम व शहर की आवश्यकतानुसार ठहरने का कोई समय नहीं रहता। पूर्व निर्धारित समय के अनुसार एक जगह से दूसरी जगह पहुंचना होता है। इसलिए बीच की जगहों में ठहरने की गुंजाइश नहीं रहती। अधिकतर विहार योजना राष्ट्रीय/राज्य राजमार्गों के द्वारा होती है जिसमें मार्ग पर ग्राम व शहर कम होते हैं व गांवों व शहरों के भीतर जाने के लिए 2-5 किलोमीटर अधिक चलना होता है अतएव उन गांव व शहरवासियों को अहिंसा का संदेश नहीं मिल पाता है।

आजकल अहिंसा का संदेश देने तो संत प्रतिदिन लाखों व्यक्तियों के घरों में यहां तक की सात समुन्दर पार पहुंचते हैं इलेक्ट्रोनिक मीडिया के माध्यम से। संत को भी आराम व श्रोता को भी आराम। समय का अपव्यय बिल्कुल नहीं, वरन् बाकी समय शास्त्रों के गहन अध्ययन व अध्यापन में लगा सकते हैं। वर्तमान समय में संसाधनों का सदुपयोग कर परमात्मा के संदेश को सरलता, सुगमता से पहुंचाया जा सकता है तो अवश्य उपयोग करना चाहिए।

उदाहरणार्थ- एक बार वैष्णव संत घर पर पधारे। मेरे हाथ में मोबाईल देख उत्सुकता से उसके बारे में व उस पर आने वाले खर्च के बारे में पूछने लगे। मैंने उन्हें बता तो दिया लेकिन बाद में कहा महाराज आपको इसकी क्या आवश्यकता है आप तो साधना कर ऐसी सिद्धि प्राप्त कर लेंगे कि अपनी बात दूसरों तक तुरन्त पहुंचा सकें व उनका उत्तर सुन सकें। उन संत ने तपाक से उत्तर दिया जो सुविधा 20 रू. के खर्च में साधन के माध्यम से मिल सकती है उसे पाने के लिए 20 वर्ष की तपस्या करूं यह कहां की समझदारी है? उन्होंने एक उदाहरण भी दिया कि एक साधक 20 साल की साधना कर पानी पर चलकर नदी पार करना सीख गया। उसने 20 साल की कठिन तपस्या में मात्र 20 रू. बचाने का नुस्खा सीखा जो कि नदी पार करने के लिए नौका वाले को देना पड़ता। ऐसी सिद्धि से न तो स्वयं का कोई कल्याण हुआ न ही पर कल्याण कर पाया। अपने जीवन के अमूल्य 20 वर्ष ऐसी सिद्धि में गंवाये जिसका भौतिक मूल्य मात्र 20 रुपये था। उसी तरह हफ्तों महीनों के दुर्गम व जोखिम भरे पैदल विहार में अहिंसा प्रचार के उद्देश्य को जितना पाया जा सकता है उससे कई हजार गुना वर्तमान के संसाधनों द्वारा कुछ क्षणों में ही पाया जा सकता है।

पूर्व में मोटर इंजन से चलने वाले वाहन नहीं थे। लोग पैदल, ऊंट, घोड़ों आदि से यात्राएं करते थे। बाद में बैल गाड़ी, तांगा अर्थात पशु आधारित वाहन से यात्राएं होने लगी जो कभी भी बड़ी दुर्घटना का कारण नहीं बनती थी। पूर्व में आम जनता साधु वर्ग के प्रति विशेष पूज्यता व श्रद्धा का भाव भी रखती थी, चाहे वे किसी भी धर्म के क्यों न हो, अतएव अधिकतर जगहों में रास्ते की सेवा वहां के स्थानीय लोग कर देते थे। संतों को देख वाहन भी धीरे हो जाते या सावधानी से किनारे हो जाते। वर्तमान में वाहनों की गति क्षमता दिनोदिन बढ़ रही है व पैदल यात्रियों व संतों के प्रति सावधानी रखने में भी कमी आती जा रही है। जैनेतरों की कावड़ यात्राओं में भी प्रतिवर्ष दुघर्टनायें सुनने में आ रही हैं। स्पष्ट है कि वर्तमान युग में पैदल यात्राएं करना जान जोखिम में डालना है। जैन संत 10,000 हैं व हिन्दु संत 10,00,000। पिछले 10 वर्षों में करीब 250-300 जैन संत दुर्घटना के शिकार हो गये जबकि हिन्दु संत 25-30 भी नहीं हुए होंगे, यह चिन्तनीय है।

विहार भी पहले की तरह सहजता से नहीं किये जा रहे। अधिकतर उग्र विहार होते हैं। 18-20 कि.मी. से 30-35 कि.मी. तक नित्य के होते हैं, सुबह-शाम के होते हैं, सुबह अंधेरे में शुरू होते हैं व कभी-कभी तो दिन छिपने तक खत्म होते हैं। सुबह के उग्र विहार के बाद गोचरी-पानी-थोड़ा आराम, तो कहां बचता है स्थानीय जनता व दर्शन के लिये आये यात्रियों को उपदेश देने का समय?

रमता योगी तो शब्दकोष के शब्द ही रह गये। रमता योगी बिना किसी योजना के विहार करते थे व जहां जैसी आवश्यकता होती या जितने दिन का मन करता रुकते थे व अचानक आगे बढ़ जाते थे। ग्रामवासियों के आग्रह पर भी रुक जाते थे कारण आगे का कोई पूर्व निर्धारित कार्यक्रम तय करके नहीं चलते थे। जब समझ में आता अब यहां मेरी अधिक उपयोगिता नहीं रही तभी आगे प्रस्थान कर देते थे।

वर्तमान के बिगड़ते वातावरण में पैदल यात्राएं सुरक्षित नहीं रही, विशेषकर साध्वी वर्ग के लिए। रास्ते में ठहरने के स्थान सुरक्षित नहीं रहे। साध्वियों के प्रति कई जगहों पर आदमियों की दृष्टि ठीक नहीं रहती। लोग दारू पीकर आ जाते हैं फब्तियां कसते हैं, छेड़-छाड़ करते हैं व कभी-कभी तो सारी सीमाएं लांघ जाते हैं जो अकथनीय हैं, कई बार बदनामी के डर से या हिंसामय वातावरण न हो जाये इसके चलते बात दबा दी जाती है। क्या यह उचित है कि इस पैदल विहार में हमारी पूज्य साध्वियों के साथ ऐसे व्यवहार हो? अति संवेदनशील व चिंतनीय विषय है। कई बार साधु वर्ग से दुर्व्यवहार के समाचार भी सुनने में आते हैं।

हमारी बहन बेटियों को हम घर के बाहर बरामदे मे नहीं सोने देते जबकि वह क्षेत्र हमारा अपना मोहल्ला है व सभी हमारे परिचित हैं। वही बहन बेटियों दीक्षा ले ले तो विहार के समय सुनसान इलाकों में अनजान जगहों पर अपरिचितों के बीच विद्यालय के बरामदे में सोने देते हैं जहां किसी प्रकार की घटना दुर्घटना कभी भी घट सकती है। समय तेजी से बदल रहा है, इन्टरनेट नामक वायरस छोटे-छोटे गांवों तक पहुंच रहा है। न तो पांच साल की बेटी सुरक्षित, न ही अस्सी साल की दादी मां। अब भी नहीं सम्भले तो कब सम्भलेंगे-जब सब कुछ लुट जायेगा। वर्तमान में दिल्ली जैसे शहर में प्रतिदिन गैंगरेप होते हैं।

वर्तमान भागम-भाग के दौर में श्रावक-श्राविका वर्ग भी अपनी व्यस्तताओं के कारण पूर्व की भांति समय व सेवा नहीं दे रहे। समय तेजी से बदल रहा है। द्रव्य, क्षेत्र, काल, तथा भाव के अनुसार नियमों में परिवर्तन न करना नुकसानदेह, घातक व प्रगति में बाधक है।

हिंसा से बचाव व अहिंसा प्रचार ये दोनों बिन्दु पैदल विहार में प्रासंगिक नहीं रहे अतएव समय की आवश्यकता को देखते हुए एक गांव/शहर से दूसरे गांव/शहर के मध्य वाहन का उपयोग खोल देना चाहिए जिससे असुरक्षा को आमंत्रण न मिले एवं श्रम व समय का पूरा-पूरा उपयोग अध्ययन-अध्यापन व उपदेश में किया जा सके। परमात्मा महावीर ने भी साधनों/वाहनों (नौका) का उपयोग आवश्यकता होने पर किया, यह सर्वविदित है।

परमात्मा महावीर ने सार्वजनिक वाहन (नौका) का उपयोग किया था अर्थात् वर्तमान परिपेक्ष में सार्वजनिक वाहन का उपयोग साधु-संतों के लिए तुरन्त प्रभाव से खोल देना चाहिए। सार्वजनिक वाहन जैसे रेलगाड़ी (ट्रेन) हो या बस उन्हें तो अपनी समय सारिणी के अनुसार चलना ही है चाहे आप बैठे या न बैठे। अर्थात् आपके निमित नहीं चलेगी तो क्या हर्ज है उस यात्रा में। अगर हिंसा का दोष लगता भी है तो वर्तमान सन्दर्भ में पैदल यात्रा हेतु व्यवस्था के दोष से तो बहुत कम ही है। इस अनुपयोगी, अनावश्यक, पैदल विहार का न तो कोई औचित्य रहा, न ही किसी भी तरह के उद्देश्य की पूर्ति हो पा रही है। हमारे संतों का जीवन व्यर्थ गंवाने के लिए नहीं है। हमारे संत हमारे लिए अमूल्य हैं व उनकी रक्षा हर कीमत पर करनी है। अनुपयोगी पैदल विहार के लिए अकारण संतों का नुकसान न हो, ऐसी व्यवस्था समय की आवश्यकता है।

अब रूपरेखा इंटरनेट पर भी उपलब्ध

रूपरेखा मासिक पत्रिका आप आनलाइन भी पढ़ सकते हैं, डाउनलोड कर सकते हैं, और किसी को भी आप ई-मेल कर सकते हैं। हमारा इंटरनेट पता है-
www.rooprekha.com
ई-मेल से रूपरेखा मंगवाने के लिये
कृपया हमें ई-मेल करें हमारा ई-मेल पता है
contact@rooprekha.com

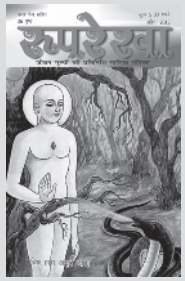

कहानी

बेताल पच्चीसी

हिन्दी कथा-साहित्य में बेताल पच्चीसी की अपनी अलग पहचान है। इन कथाओं में नीति, संस्कृति और जीवनोपयोगी शिक्षाएं हैं। उसी की एक-एक कथा पढिये हर अंक में। *-संपादक*

बहुत पुरानी बात है। धारा नगरी में गंधर्वसेन नाम के एक राजा राज करते थे। उनके चार रानियां थीं। उनके छः लड़के थे जो सब-के-सब बड़े ही चतुर और बलवान थे। संयोग से एक दिन राजा की मृत्यु हो गई और उनकी जगह उनका बड़ा बेटा शंख गद्दी पर बैठा। उसने कुछ दिन राज किया, लेकिन छोटे भाई विक्रम ने उसे मार डाला और स्वयं राजा बन बैठा। उसका राज्य दिनोदिन बढ़ता गया और वह सारे जम्बूद्वीप का राजा बन बैठा। एक दिन उसके मन में आया कि उसे घूमकर सैर करनी चाहिए और जिन देशों के नाम उसने सुने हैं, उन्हें देखना चाहिए। सो वह गद्दी अपने छोटे भाई भर्तृहरि को सौंपकर, योगी बनकर, राज्य से निकल पड़ा।

उस नगर में एक ब्राह्मण तपस्या करता था। एक दिन देवता ने प्रसन्न होकर उसे एक फल दिया और कहा कि इसे जो भी खायेगा, वह अमर हो जायेगा। ब्राह्मण ने वह फल लाकर अपनी पत्नी को दिया और देवता की बात भी बता दी। ब्राह्मणी बोली- 'हम अमर होकर क्या करेंगे? हमेशा भीख मांगते रहेंगे। इससे तो मरना ही अच्छा है। तुम इस फल को ले जाकर राजा को दे आओ और बदले में कुछ धन ले आओ।'

यह सुनकर ब्राह्मण फल लेकर राजा भर्तृहरि के पास गया और सारा हाल कह सुनाया। भर्तृहरि ने फल ले लिया और ब्राह्मण को एक लाख रुपये देकर विदा कर दिया। भर्तृहरि अपनी एक रानी को बहुत चाहता था उसने महल में जाकर वह फल उसी को दे दिया। रानी की मित्रता शहर-कोतवाल से थी। उसने वह फल कोतवाल को दे दिया। कोतवाल एक वेश्या के पास जाया करता था। वह उस फल को उस वेश्या को दे आया। वेश्या ने सोचा कि यह फल तो राजा को खाना चाहिए। वह उसे लेकर राजा भर्तृहरि के पास गई और उसे दे दिया। उसने महल में जाकर रानी से पूछा कि तुमने उस फल का क्या किया। रानी ने कहा- 'मैंने उसे खा लिया।' राजा ने वह फल निकालकर दिखा दिया। रानी घबरा गयी और उसने सारी बात सच-सच कह दी। भर्तृहरि ने पता लगाया तो उसे पूरी बात ठीक-ठीक मालूम हो गयी। वह बहुत दुःखी हुआ। उसने सोचा, यह दुनिया माया-जाल है। इसमें अपना कोई नहीं। वह फल लेकर बाहर आया और उसे धुलवाकर स्वयं खा लिया। फिर राजपाट छोड़ योगी का भेस बना, जंगल में तपस्या करने चला गया।

भर्तृहरि के जंगल में चले जाने से विक्रम की गद्दी सूनी हो गयी। जब राजा इन्द्र को यह समाचार मिला तो उन्होंने एक देव को धारा नगरी की रखवाली के लिए भेज दिया। वह रात-दिन वहीं रहने लगा।

भर्तृहरि के राजपाट छोड़कर वन में चले जाने की बात विक्रम को मालूम हुई तो वह लौटकर अपने देश में आया। आधी रात का समय था। जब वह नगर में घुसने लगा तो देव ने उसे रोका। राजा ने कहा- 'मैं विक्रम हूं। यह मेरा राज है। तुम रोकने वाले कौन होते हो?

देव बोला, 'मुझे राजा इन्द्र ने इस नगर की चौकसी के लिए भेजा है। तुम सच्चे राजा विक्रम हो तो आओ, पहले मुझसे लडो।'

दोनों में लड़ाई हुई। राजा ने जरा-सी-देर में देव को पछाड़ दिया। तब देव बोला- 'हे राजन्! तुमने मुझे हरा दिया। मैं तुम्हें जीवन-दान देता हूं।'

इसके बाद देव ने कहा- 'राजन् एक नगर और एक नक्षत्र में तुम तीन आदमी पैदा हुए थे। तुमने राजा के घर में जन्म लिया, दूसरे ने तेली के और तीसरे ने कुम्हार के। तुम यहां का राज करते हो, तेली पाताल का राज करता था। कुम्हार ने योग साधकर तेली को मारकर शम्सान में पिचाश बना सिरस के पेड़ से लटका दिया है। अब वह तुम्हें मारने की फिराक में है। उससे सावधान रहना।'

इतना कहकर देव चला गया और राजा महल में आ गया। राजा को वापस आया देख सबको बड़ी खुशी हुई। नगर में आनन्द मनाया गया। राजा फिर राज करने लगा।

एक दिन की बात है कि शान्तिशील नाम का एक योगी राजा के पास दरबार में आया और उसे एक फल देकर चला गया। राजा को आशंका हुई कि देव ने जिस आदमी को बताया था, कहीं यह वहीं तो नहीं है! यह सोच उसने फल नहीं खाया, भण्डारी को दे दिया। योगी आता और राजा को एक फल दे जाता।

संयोग से एक दिन राजा अपना अस्तबल देखने गया था। योगी वहीं पहुंचा और फल राजा के हाथ में दे दिया। राजा ने उसे उछाला तो वह हाथ से छुटकर धरती पर गिर पड़ा उसी समय एक बन्दर ने झपटकर उसे उठा लिया ओर तोड़ डाला। उसमें से एक लाल निकला। जिसकी चमक से सबकी आखें चौधिया गयीं। राजा को बड़ा अचरज हुआ। उसने योगी से पूछा- 'आप यह लाल मुझे रोज क्यों दे जाते हैं?

योगी ने जवाब दिया, 'महाराज! राजा, गुरू, ज्योतिषी, वैद्य और बेटी, उनके घर कभी खाली हाथ नहीं जाना चाहिए।'

राजा ने भण्डारी को बुलाकर पीछे के सब फल मंगवाये। तुड़वाने पर सबमें एक-एक लाल निकला। इतने लाल देखकर राजा को बड़ा हर्ष हुआ। उसने जौहरी को बुलवाकर उनका मूल्य पूछा। जौहरी बोला- 'महाराज, ये लाल इतने कीमती हैं कि इनका मोल करोड़ों रूपयों में भी नहीं आंका जा सकता। एक-एक राज्य के बराबर है।'

यह सुनकर राजा योगी का हाथ पकड़कर गद्दी पर ले गया। बोला- 'योगीराज, आप सुनी हुई बुरी बातें, दूसरों के सामने नहीं कहीं जातीं।

राजा उसे अकेले में ले गया। वहां जाकर योगी ने कहा- 'महाराज बात यह है कि गोदावरी नदी के किनारे मसान में मैं एक मंत्र सिद्ध कर रहा हूं। उसके सिद्ध हो जाने पर मेरा मनोरथ पूरा हो जायेगा। तुम एक रात मेरे पास रहोगे तो मंत्र सिद्ध हो जायेगा। एक दिन रात को हथियार बांधकर तुम अकेले मेरे पास आ जाना।'

राजा ने कहा- 'अच्छी बात है।'

इसके उपरान्त योगी दिन और समय बताकर अपने मठ में चला गया। **क्रमशः**

-प्रस्तुति : साध्वी वसुमती

मंत्र-विज्ञान

सूर्य की वैदिक ऋचा के चमत्कारी यंत्र से होता है कायाकल्प

सूर्य देव की वैदिक ऋचाओं से आराधना से असाध्य रोग मात्र 10 दिन में ठीक होने का विधान है। प्रथम वेद ऋगवेद के नृच ऋचा से आदित्य को अर्ध्य देने से कायाकल्प और भौतिक ऐश्वर्य निश्चित है।

इसका विवरण सन् 1708 में भास्कर राय द्वारा ऋगवेद की उपासना विधि से कायाकल्प का विवरण मिलता है। भास्कर राय दक्षिण में कर्नाटक के बीजापुर में यवन शासन के सचिव रहे। विगत 20वीं शताब्दी में हिमालय के शानगंज आश्रम में दीक्षित स्वामी विशुद्धानंद परमहंस ने सूर्य किरणों एवं सूर्य विज्ञान से महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराज सहित अनेकों के असाध्य रोगों का उपचार किया। स्वामी विशुद्धानंद परमहंस सूर्य किरणों से मृत में जीवन तक फूंकने में समर्थ थे (देखेः पाल ब्रिंटन कृत गुप्त भारत की खोज) वैसे प्राचीनकाल में महाकवि कालिदास ने रूद्र के रूप भुवन भास्कर सूर्य को 100 श्लोकों के

पाठ से प्रसन्न कर कुष्ठ रोग से छुटकारा पाया। कालिदास का सूर्य शतक रोग निवारण का अचूक ब्रह्मास्त्र है।

महामुनि अगस्त्य के श्री आदित्यहृदयम स्तोत्र को रोग से मुक्ति देने वाला बताया गया। श्री आदित्यहृदयम का पांचवां मंत्र है :

सर्व मंगल मांगल्यं सर्व पाप प्रणाशनम। चिंता शोक प्रशमनमायुर्वर्द्धनमुत्तमम।।

अर्थात यह नित्य अक्षय एवं परम कल्याणमय सभी मंगलों की भी मंगल और संपूर्ण पापों का नाश करने वाला है। यह चिंता, शोक मिटाने वाला और आयु को बढ़ाने वाला उत्तम साधन है। इस स्तोत्र के प्रति दिन तीन बर पाठ से चमत्कारी फल मिलना कहा गया है। ऋषि भास्कर राय ने स्तोत्र में लोकसाक्षी त्रिलोकेशः कर्ता हर्ता तमिस्त्रहा का आराधना की है। परिचारक पूजा में 12 आदित्यों के लिए बार-बार सूर्य गायत्री जप की जाती है। सूर्य अर्ध्यदान विधि, अर्ध्येतिकर्त्तव्यता, अर्ध्यमंत्र भी महत्वपूर्ण है। पौराणिक मिश्रित भास्कर मंत्र में जगदत्पत्तिनाशाय श्री सूर्याय नमो नमः सहित दूसरे दिव्य मंत्र हैं। विपलाद आदि ऋषि गणों के ऋक का उल्लेख करते हुए सूर्य की जन्म-मृत्यु जरा व्याधि संसार भय नाशक के रूप में अर्चना की गई। कृत भास्कर के अंतिम अध्याय में रोग फलनाशक यंत्र है। इस यंत्र से भीषण कुष्ठ, भयानक ज्वर और सभी प्रकार के असाध्य रोगों का नाश निश्चित लिखा है। इस श्रीसूर्य के सर्वरोग नाशक यंत्र के वर्ग के चारों तरफ सूर्य का बीजाक्षर मंत्र लिखा है। मध्य में अष्ट कमल दल में त्रिकोण में सूर्य के बीज मंत्र का ऊं ही त्रिकोण में मातृकाओं से दिव्य शक्तिवान है। त्रिकोण के कोने और वर्ग के कोर्ण पर भी ऊं ही यंत्र की शक्ति को बढ़ाने में समर्थ है। कुछ मिलाकर भास्कर राय के कृत भास्कर, महाकवि कालिदास का सूर्य शतक, महर्षि अगस्त्य का आदित्यहृदय स्तोत्र आदि सभी रोगों को जड़ के समाप्त करने वाले हैं।

-प्रस्तुति : अरुण तिवारी

उससे पानी मत मांगो जिसे प्यास की पहचान नहीं है,
उसे जीवन मत सौंपो जिसे सांस की पहचान नहीं है,
ज़िन्दगी के लम्बे सफर में अकेले भले ही चलो मगर,
उसे विश्वास मत दो जिसे विश्वास की पहचान नहीं है।

-आचार्यश्री रूपचन्द्र

ताकि चमक उठें आपके बाल

प्रदूषण और खान-पान के कारण बालों की प्राकृतिक नमी खो रही है, जिसके कारण बेजान और रूखे हो रहे हैं। बालों की समस्या इस समय केवल महिलाओं की ही नहीं बल्कि पुरुषों की भी है।

सुंदर, काले और चमकदार बाल किसे अच्छे नहीं लगते, बाल खूबसूरती में चार चांद लगा देते हैं। लेकिन तरह-तरह के शैंपू का प्रयोग करने से बाल असमय झड़ने लगते हैं।

सिर की त्वचा उम्र बढ़ने के साथ-साथ रूखी हो जाती है। तैलीय ग्रंन्थियां सिर की त्वचा के लिए जो कुदरती जरूरी तेल निकालती है, वह धीमी गति से काम करती हैं और सिर्फ शैंपू के लगातार इस्तेमाल व प्रदूषण के कारण बालों की चमक खोती चली जाती है।

ऐसे में बालों की प्राकृतिक नमी वापिस लाने और चमकदार बनाने के लिए जरूर है अतिरिक्त देखभाल की। आइए हम आपको कुछ नुस्खें बता रहे हैं जिनका प्रयोग करने से आपके बाल चमकने लगेंगे।

बालों को चमकाने के टिप्स

• बालों को धोते समय पानी में नीबू निचोड दीजिए, उस पानी से बाल धोकर बाहर आइए, ऐसे करने से बालों में चमक आ जायेगी।

• बालों की साफ-सफाई पर खास ध्यान दीजिए। पसीना बालों की जड़ों में पहुंचने पर नुकसान पहुचाता है। इससे बचने के लिए हफ्ते में कम से कम दो बार बालों की सफाई जरूर कीजिए।

• ध्यान रखिये कि बालों में रूसी न होने पाये। रूसी होने से बाल बेजान होकर टूटने लगते हैं, इससे छुटकारा पाने के लिए सबसे पहले बालों में अच्छी तरह तेल लगा लीजिए।

• आलू उबालने के बाद बचे हुए पानी में एक आलू मसलकर बाल धोने से बाल चमकीले, मुलायम होंगे। इसके अलावा इसका प्रयोग करने से सिर में खाज, बालों का सफेद होना व बालों का झड़ना कम होगा।

• नारियल के तेल में नीबू का रस मिलाकर बालों की जड़ों में लगाने से बालों का असमय पकना, झड़ना बंद हो जाता है और बाल चमकदार होते हैं।

• दही में चुटकी भर फिटकरी और थोड़ी सी हल्दी मिला लीजिए। इस मिश्रण को सिर के बालों में लगाने से सिर की गंदगी दूर होगी साथ ही सिर में फैला संक्रमण भी दूर होगा और बालों में निखार भी आयेगा।

• आंवले का चूर्ण व पिसी हुई मेंहदी मिलाकर लगाने से बाल काले, घने और चमकीले होते हैं।

• नारियल के तेल की बजाय उसके दूध से बालों की मसाज कीजिए, नारियल का दूध बालों के लिए उतना ही कारगर है जितना कि उसका तेल। इससे बाल मजबूत भी होंगे और बालों में चमक भी आयेगी।

• जैतुन के तेल से 15-20 मिनट तक बालों की मालिश कीजिए। इससे बालों की कंडिशनिंग अच्छे से होगी। तेल लगाने के बाद गुनगुने पानी में टॉवेल भिगाकर थोड़ी देर तक बालों पर लपेट लीजिए, ऐसा करने से बालों की चमक हमेशा बरकरार रहेगी।

कंडिसनर से ज्यादा प्रयोग करने से बचें, उसके स्थान पर आधी बाल्टी पानी में दो छोटा चम्मच शहद मिलाकर लगाइए। इस पानी से बालों को धोने से वही असर दिखाई देगा जो कंडीशनर से दिखता है।

-प्रस्तुति : डॉ. सोहनवीर सिंह

चुटकुले

1. एक राजा अपने नौकरों से कहते हैं कि तुम ऐलान करवा दो कि-"मेरे पास इतनी बड़ी तलवार है कि तुम सब के छक्के छुड़ा देगी।" नौकर तुतला बोलता था वह गया और बोला- 'तुनो-तुनो हमारे राजाजी के पास इतनी बड़ी सलवार है कि सबके कच्छे सिलवा देगी।

2. बच्चों सिनेमा देखना बहुत बुरी बात है अध्यापिका ने कहा। हां अध्यापिका जी! क्लास में से चन्दा उठकर बोली मैंने सिनेमा देखना एक दम बन्द कर दिया है। शाबाश! तुम अच्छी लड़की हो। तभी दूसरी लड़की बोल उठी मैडम इसके घर टेलीवीजन आ गया है।

3. बरसात हो रही थी दो बच्चे गप्प हांक रहे थे। यार कल एक चींटी हाथी पर क्या बैठ गई बेचारा हाथी मर गया। यार तुम हाथी की बात करते हो, दूसरा बोला कल सारी रात आसमान मेरी जेब में था। जब से बाहर निकला है, तब से बरस रहा है।

4. पिता अपने बेटे से-पप्पू कितने कम नंबर मिले हैं तुम्हें इस परीक्षा में? पप्पू यह नया फैशन है पिताजी। पिताजी-कैसा फैशन? पप्पू-पिताजी ये मिन्नी नंबर है!

-प्रस्तुति : गगन

मासिक राशि भविष्यफल-अगस्त 2013

○ डॉ. एन.पी. मित्तल, पलवल

मेष- मेष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिलाकर शुभफल दायक है। सरकारी कर्मचारियों के लिये भी सन्तुष्टि दायक समय है। इस राशि के जातकों के लिए किसी नव निर्माण का प्रसंग आ सकता है। कुछ का रूका हुआ काम बनेगा। कार्यों में रूकावटें आएंगी किन्तु अन्ततः सफलता मिलेगी। मित्र मददगार होंगे।

वृष- वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अर्न्तविरोध के चलते सफलता देने वाला हैं कुछ खर्चा भी विशेष होगा। नये लोगों से मुलाकातें काम आयेंगी। राजनीति के क्षेत्र में इस राशि के जातक अपनी जगह बना पायेंगे। मित्रों से लाभ-होगा। किसी दूसरे के झंझट में न पड़े, अन्यथा नुकसान हो सकता है।

मिथुन- मिथुन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अधिक आय तथा कम व्यय वाला है। कुछ जातकों का पिछला चला आ रहा ऋण भी चुकता हो जायेगा या रूका हुआ पैसा मिल जाएगा। विद्यार्थियों को भी अपने परिश्रम का सुफल मिलेगा। घर-परिवार में सामन्जस्य बना रहेगा। मेहमानों की आवा जाही लगी रहेगी। कुछ नई योजनाओं का क्रियान्वयन होने का समय है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

कर्क- कर्क राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभलाभ की स्थिति लिये रहेगा। घर परिवार में चल रहे विरोध को शान्त करने में काफी ऊर्जा का व्यय होगा। कुछ जातकों को नव निर्माण होने से खुशी मिलेगी तथा कुछ को लंबित पड़ी यात्राऐं पूरी होने की खुशी होगी। कुछ जातकों के यहां कोई अनुष्ठान आदि पूरा हो सकता है। इस राशि के जातक अन्य के झगड़ों से दूर रहें। शत्रु अनिष्ट कर सकते हैं,

सिंह- सिंह राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुछ अवरोधों के चलते परिश्रम साध्यलाभ देने वाला है। कुछ जातकों को अत्याधिक आर्थिक लाभ होगो किन्तु उन्हें पैसे का सही इस्तेमाल हो, यह सुनिश्चित करना पड़ेगा। कुछ नौकरी पेशा जातकों को पदोन्नति होने की खुशी हो सकती है।

कन्या- कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिला कर शुभ फल दायक ही कहा जाएगा। व्यवसाय संबंधी कुछ यात्राएं भी होंगी जिनका सुफल मिलेगा। परिवार में छोटी मोटी कहासुनी होगी जो सुलझ जाएगी। मानसिक तनाव से छुटकारा मिलेगा। आप नए कपड़े खरीद सकते हैं। आप नई योजनाओं को अंजमा को देंगे।

तुला- तुला राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से इस माह का आदि तथा अन्त लाभकारी है तथा मध्य उतना लाभकारी नहीं है। वैसे आय और व्यय में संतुलन बना रहेगा। कुछ जातकों को लंबित पेड़ भूमि भवन के फैसलों का भी समय है जो इनके पक्ष में होगा। मित्रों और परिवार जनों में आपकी साख बनी रहेगी। सामाजिक कार्यों में जनता का सहयोग मिलेगा। कोई महत्वपूर्ण सूचना भी आपको इस माह खुशी दे सकती है।

वृश्चिक- वृश्चिक राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह काग चेष्टा रखने का है। लाभ के अवसर को हाथ से जाने न दें। ऐसा लगेगा कि आर्थिक लाभ होगा किंतु यदि समय का सदुपयोग न किया तो हाथ में आता आता पैसा रूक जाएगा। कुछ सूचनाएं इस प्रकार भी मिलेगी। कि मानसिक चिंता बनेगी। कुछ जातकों के मुद्कमें आदि के फैसले के फलस्वरूप उन्हें लाभ हो सकता है।

धनु- धनु राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह परिश्रम एवं संघर्ष के चलते अन्य लाभ देने वाला है। किसी के साथ हंसी-मजाक करते हुए अपनी सीमा को न लांघें। भौतिक वस्तुओं की खरीद की होड़ के चक्कर में न पड़े। इन जातकों के भूमि भवन संबंधी समस्या का कोई हल निकल आएगा। अपने बुजुर्गों का सम्मान करें तथा उनके स्वास्थ्य की अनदेखी न करें। दाम्पत्य जीवन में सामन्जस्य बनाए रखें।

मकर- मकर राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह सामान्य लाभ देने वाला है। हां राजनीतिक लोगों को अधिक फायदा होगा। उनका वर्चस्व बढ़ेगा। शत्रु परास्त होंगे। घर परिवार में शांति व सामन्जस्य बना रहेगा। दाम्पत्य जीवन में कुछ कटुता आएगी किन्तु कोई हल निकल आएगा। ये जातक यात्रा तो करें पर इस माह पहाड़ी यात्रा न करें। ये जातक किसी भी वार्ता में अपशब्द बोलने से बचे अन्यथा हानि हो सकती है।

कुभ- कुंभ राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह सामान्य लाभ देने वाला है। इस माह के आरम्य तथा अन्त में शुभ फल मिलेंगे तथा मध्य में मिश्रित फल मिलेंगे। सरकारी कर्मचारियों को उनके अधिकारियों की मदद मिलेगी। मुकदमें आदि में सफलता मिलेगी। जब अशुभ फल मिलेगा तो खर्चा अधिक होगा।

मीन- मीन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह शुभफल दायक नहीं है। शरीर में अस्वस्थता के कारण कार्य में पूरा ध्यान नहीं दे पायेंगे, ऐसा लगता है। पीलिया, मलेरिया, आदि रोग घेर सकते हैं, कुछ लोग पेट की वजह से परेशान रहेंगे। ये जातक मुकदमे आदि में विजय प्राप्त कर सकते है।

-इति शुभम्

अहिंसा की मशाल को घर-घर तक पहुंचाएं

डिट्रायट, मिशिगन जैना कन्वेंशन में पूज्यवर का उद्बोधन

नॉर्थ अमेरिका में कार्यरत करीब पचार जैन सेंटरों की प्रतिनिधि संस्था जैन एसोसियेशन ऑफ नॉर्थ अमेरिका (जैना) के सत्रहवे द्विवार्षिक कन्वेंशन को संबोधित करते हुए पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी ने कहा- आज पूरा विश्व हिंसा के आतंक से भयभीत है। हिंसा-भेड़िये के खूनी पंजों ने पूरी मानव-जाति को दबोच लिया है। आतंकवादी हिंसा, मजहबी उन्माद, नक्सली हिंसा आदि ने जन-जीवन का जीना मुश्किल कर दिया है-

आदमी की शक्ल से अब डर रहा है आदमी
आदमी को लूटकर घर भर रहा है आदमी
आदमी ही मारता है मर रहा है आदमी
समझ कुछ आता नहीं क्या कर रहा है आदमी

आपने कहा- अहिंसा धर्म हमें विरासत में मिला है। भगवान महावीर ने बुलन्द आवाज से कहा था- सव्वे पाणा न हंतव्वा, एस धम्मे धुवे णिइए सासए- अहिंसा धर्म ही ध्रुव है, नित्य है, शाश्वत है। हिंसा-पीडित मानव-समाज को आज इसी अहिंसा-धर्म की सर्वाधिक आवश्यकता है। इस स्थिति में हमारा यह कर्तव्य बनता है अहिंसा धर्म की मशाल को हम घर-घर तक पहुंचाएं। इसके लिए मैं जैना से जुड़े सभी जिम्मेवार पदाधिकारियों तथा कार्यकर्ताओं से आग्रह करूंगा कि अहिंसा की प्रतिष्ठा के लिए एक प्रभावी कार्य-योजना बनाएं ताकि हिंसा की लपटों से मानव समाज को बचाया जा सके। आपने कहा- अहिंसा के इस अभियान में सारे जैन समाज को एक जुट होने में कोई आपत्ति भी नहीं होनी चाहिए। इतना ही नहीं, पूरा धार्मिक समाज इस अभियान में हमारे साथ खड़ा होगा। उपस्थित विशाल जन-समुदाय ने पूज्यवर के उद्बोधन का करतल-ध्वनि से बार-बार स्वागत किया।

इस जैना कन्वेंशन में करीब पांच हजार लोगों की भगीदारी रही। संत-पुरुषों में पूज्य गुरूदेव के साथ-साथ आचार्य चन्दनाजी, भट्टारक चारूकीर्तिजी, अमरेन्द्र मुनि, जैन विश्व भारती से समणी-समुदाय, बेंगलोर से दो स्थानकवासी समणियाँ, स्वामी गुर्वानन्दजी, श्री चित्रभानुजी, पंडित हुकमचन्दजी भारिल्ल आदि संतों-विद्वानों के प्रवचन हुए। पूज्य गुरूदेव के उद्घाटन-समारोह के प्रवचन के अलावा दो प्रवचन (1) अब हम अमर भये न मरेंगे तथा (2) समयं गोयम मा पमायए विषयों पर विशेष प्रवचन हुए। पूज्यवर के प्रवचनों की गूंज चारों ओर सुनी जा सकती थी। योगी अरुण तिवारी के प्रभावी दो योगा सेशन हुए। डिट्रायट जैन समाज द्वारा कन्वेंशन आयोजना की संपूर्ण व्यवस्था अद्भुत थी, प्रशंसनीय थी। इस प्रकार 4-7 जुलाई चार-दिवसीय जैना कन्वेंशन, संतों के मंगल-प्रवचन, अनेक

सांस्कृतिक कार्यक्रम, विविध विषयों पर सामूहिक चर्चा, योग-कक्षाएं, युवा-संवाद तथा सुरूचिपूर्ण भोजन सभी दृष्टियों से सफल सुखद रहा।

छह दिवसीय प्रवास शिकागो में

कई वर्षों पश्चात् पूज्यवर के अप्रत्याशित पदार्पण से शिकागो महानगर के समाज में हर्षोल्लास की लहर दौड़ गई। संयोग से जैन टेंपल का 20वें वार्षिक समारोह का अवसर भी था। इस तीन दिवसीय समारोह में समाज ने पूज्य गुरूदेव के प्रवचनों/कविताओं का भरपूर आनंद लिया। समारोह का शुभारंभ करते हुए पूज्य आचार्यवर ने कहा- भगवान महावीर के सामने प्रश्न आया- जो व्यक्ति न आत्मा/परमात्मा को मानता है, न पूर्व जन्म/पुनर्जन्म को मानता है, न कर्म और कर्म-फल को मानता है, क्या उसके लिए भी धर्म-आराधना जरूरी है? भगवान महावीर ने उत्तर में कहा- उसके लिए भी धर्माचरण जरूरी इसलिए है कि जीवन में शांति तो वह भी चाहता है। ऐसा कौन होगा जिसे शांति की कामना नहीं है। और शांति का एक मात्र मार्ग धर्माचरण और भक्ति आराधना ही है। आपने कहा- आज व्यक्ति और समाज में अशांति बढने का कारण धर्म-आराधना की कमी ही है-

बसर में जैसे-जैसे बन्दगी कम होती जाती है
चिरागे जिन्दगी में रोशनी कम होती जाती है
यह इन्सान जबसे चांद की धरती पे पहुंचा है
न जाने क्यों जमीं पे चांदनी कम होती जाती है।

जैन सेंटर के प्रेजिडेन्ट श्री तैजस शाह तथा ट्रष्टीजनों ने पूज्यवर के प्रति बार-बार आभार प्रकट करते हुए कहा- आपके आत्म-स्पर्शी प्रवचन हमें सदा प्रेरणा देते रहेंगे। हमारा आपसे कर बद्ध निवेदन है शिकागो-समाज को हर वर्ष अपना समय देने की कृपा करें। अपनी अमेरिका-यात्रा में शिकागो का भी समावेश करें। शिकागो समाज पहले से काफी बड़ा हो गया है। पूज्यवर के प्रवचन में हजारों की उपस्थिति उसका जीवंत प्रमाण है। युवा पीढ़ी भी टेंपल कार्यक्रमों में बड़ी संख्या में भाग लेती है।

इस बार पूज्यवर का शिकागो-प्रवास प्रमुखतः श्री सुन्दर शारदा जैन के विनम्र निवेदन पर उनके आवास पर ही रहा। इस परिवार ने खूब अच्छी जिम्मेवारी निभाई। अरूण योगी की योग-कक्षाएं प्रतिदिन इनके आवास पर ही होती थी। इसके साथ-साथ श्री नरेश कुसुम नौहरिया, श्री अजय राजश्री जैन, श्री जगदीश रेणुका मेहता, श्री विनोद रश्मि गांधी, डॉ. सुरेश सुरेखा आवड़ की भावनाओं को मान देते हुए पूज्यवर ने उनके आवासों पर आहार-दान का लाभ दिया। श्री कुशलराज सिंघवी, श्री अजीत गांधी, श्री कुन्दन मरलेचा ने जैन सेंटर के आयोजनों में अच्छी भूमिका निभाई। इस प्रकार शिकागो-प्रवास एक अविस्मरणीय यादगार बन गया।

न्यूजर्सी में एक-दिवसीय योग शिविर

श्री हेमेन्द्र दक्षा पटेल परिवार पूज्यवर के साथ वर्षों से श्रद्धा भावना से जुड़ा है। समय की अल्पता के बावजूद उनके प्रयासों से एक-दिवसीय योग-शिविर बहुत ही प्रभावशाली रहा। सेवाभावी श्री महेन्द्र पटेल के आवास पर आयोजित इस शिविर में श्री दशरथ भाई, श्री सुमिल मधु शाह आदि पन्द्रह परिवारों ने योगाभ्यास तथा पूज्यवर के प्रवचन का लाभ लिया।

वरमोंट में सात-दिवसीय प्रवास

मालेरकोटला निवासी श्री हंसराजजी चौधरी का विशाल परिवार पूज्य गुरूदेव के प्रति बचपन से ही पूरी श्रद्धा-भावना से जुड़ा है। उनकी तीव्र इच्छा है मानव मंदिर मिशन सेंटर का शुभारंभ वरमोंट स्टेट मे हो। उसी को ध्यान में रखते हुए पूज्यवर ने सात दिवसीय प्रवास वरमोंट में रखा। मिशन का पंजीकरण तथा उचित स्थान के लिए अच्छी भूमिका बनी। उम्मीद है मानव मंदिर मिशन के अन्तर्गत हिन्दू जैन टेंपल तथा योग-ध्यान केन्द्र यहां शीघ्र ही आरंभ हो जाए। इसी परिवार का एक सदस्य लेनसिंग में रहता है पूज्य गुरुदेव का यहां भी दो दिवसीय प्रवास रहा। सभी ने पूरी जिम्मेवारी से लाभ लिया। वरमोंट स्टेट का प्राकृतिक सौन्दर्य स्वीडन देश की स्मृति दिलाता है। यहां गोरे लोगों की बहुलता को देखते हुए काफी संभावनाएं दिखती है। इस प्रकार पूज्य आचार्यवर का पच्चीस दिवसीय अमेरिका प्रवास का पहला चरण संपन्न हुआ। डिट्रायल जैना कन्वेंशन के पश्चात पूज्यवर कनाडा देश पधार गए हैं। जिसका वर्णन आप अगले अंक में पढेगे।

जैन आश्रम, मानव मंदिर मिशन नई दिल्ली में पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी अपनी सहयोगी साध्वियों के साथ सानंद बिराजमान हैं। मानव मंदिर गुरूकुल तथा सेवाधाम हॉस्पिटल दोनों निरंतर प्रगति पर है। दोनों की गुणवत्ता क्षमता का प्रभाव देश-विदेश में बढता जा रहा है।

मातृस्वरूपा साध्वी चांदकुमारी जी अपनी सहयोगी साध्वियों दीपांजी तथा पद्मश्रीजी के साथ हिसार, भीखी, भवानीगढ होते हुए चातुर्मास हेतु सुनाम, पंजाब, मानव मंदिर सेन्टर में पधार गई हैं। वयोवृद्ध होते हुए आपका हौसला अनुकरणीय है। लोगों में अच्छा उत्साह है।

बधाई

मानव मंदिर मिशन नई दिल्ली तथा हिसार का प्रमुख परिवार तथा पूज्य गुरूदेव के प्रति पूर्णतया श्रद्धा-समर्पित श्री पतराम राजलीवाल की धर्म-पत्नी श्रीमती शकुन्तलाजी का हिसार नगर की मेयर निर्वाचित होने पर बहुत-बहुत बधाई। आशा ही नहीं, पूरा विश्वास है श्रीमती शकुंतलाजी नगर मां की भूमिका यशस्वी ढंग से निभाएगी।

-पूज्यवर के साथ शिकागो जैन सेंटर के पदाधिकारी तथा कार्यकर्ता-गण।

-योगा शिविर में प्राणायाम का प्रशिक्षण देते हुए योगी अरूण तथा शिवारार्थी-जन।

-वरमोंट में मानव मंदिर मिशन के सदस्य-गण पूज्यवर के साथ।

-लिविंग्स्टन, न्यूजर्सी में योग शिविरार्थी पूज्य गुरूदेव तथा श्री अरूण योगी के साथ।

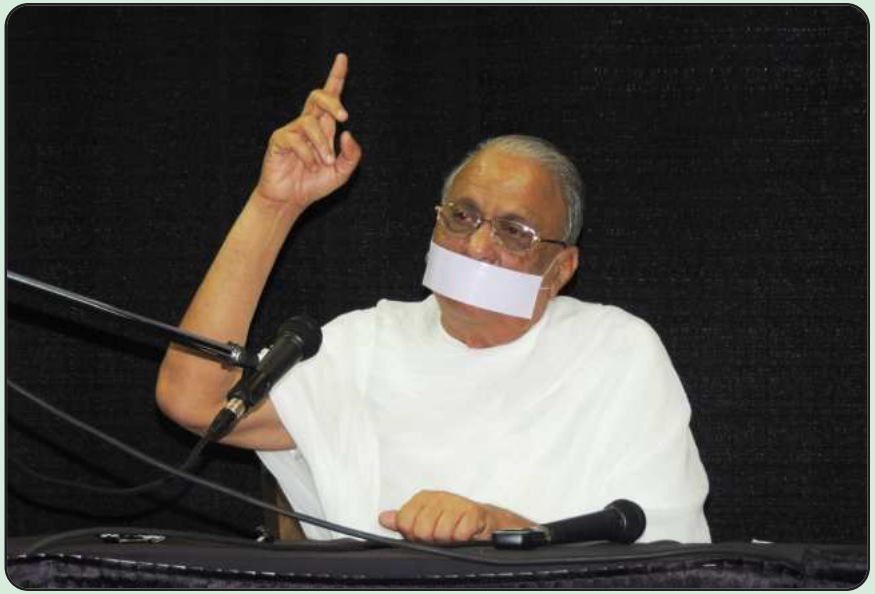

-शिकागो जैन सेंटर के बीसवें वार्षिक समारोह को संबोधित करते हुए पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी।

-पूज्य गुरूदेव के प्रवचन का आनंद लेते हुए विशाल शिकागो जन-समुदाय।

-डिट्रायर्ट 17वें जैना कन्वेंशन के अवसर पर आकर्षक शोभा-यात्रा का नेतृत्व करते हुए (बायें से) पूज्य भट्टारकजी, पूज्य आचार्यवर, स्वामी गुर्वानन्दजी, स्वामी श्रुतप्रज्ञ आदि।

-जैना कन्वेंशन, डिट्रायर्ट के Blessing Ceremony में उद्‌बोधन-प्रवचन करते हुए पूज्य आचार्यश्री। मंच पर आसीन हैं अन्य धर्म-नेता-गण।